64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

Item Code: 641 Participant Code: 040

"तो मैं क्या करूँ..."

मन पंछी बहता है जैसे
बिना डोर से पतंग।
मधुर यादों को हमे कभी न भुलाई
फिर भूल गया तो मैं क्या करूँ?

वक्त हमेशा बहता था
वो कभी नही रुकता, निरंतर चलता।
अपनी पास अधिक समय नही
इसलिए तो मैं क्या करूँ?

रात की अंधेरा मुझे डरता
भयानक आवाज़ आता
मुझे नही पता था की मैं
क्या करता और कहाँ गया।

यू ही बह रहा है फिर
मन मे अनेक कार्य रहता
समझा न तो मैं क्या करू!

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തിയ്യതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

मेरा नाकत है पिता
वो परिवार को कसकर पकड़कर
मुझे चलना, गिरना, उतरना सिखाता
वो न तो मैं क्या करूँ ?

ये दुनिया बहुत सुन्दरता, लेकिन
वे घमंड और हिकारत से देखा
उनका अहंकार की आवाज़ आया
तो मैं क्या करूँ ?

मुझे करना चाहिए...
मुझे सीखता चाहिए...
जीवन को हार मत मानो
फिर मे अकेला नई

मेरे पास अपनी परिवार थी
दोस्तों थी, भाई-बहनों थी
और इस सुंदर लोग भी थी
उनके लिए मैं कुछ करता चाहता

Item Code: 641 Participant Code: 040

बचपन हमे हर पल मिलता
वह समय हम अच्छा पसंद आता।
हमे बहुत-बडा संस्मरण लगता
उसे छोडकर तो मे क्या करूँ?

हर पल हर अनुभव लगता
कुछ दुख की और कुछ सुख की।
जैसे मीठा और खुश याद
मन मे हमेशा बहती थी।

अपनी पिता के बिना हम कौन है?
अपनी यादों के बिना हम कौन हैं?
उनको छोडता तो हमे क्या करता
कोई ने कुछ पता न था।

क्या करता समझता की समय तक,
"मन ऐसा बहता था
जैसे बिना डोर से पतंग"